भजनों में मौलिकता लायें ।

प्राय: देखा जाता है कि कहीं धार्मिक कार्यक्रम में भजन संध्या हो या मंदिर में भजन कीर्तन का अवसर, हम सब बड़े भक्ति भाव से गीत संगीतमय प्रस्तुतियों में लीन हो जाते है । भजन और स्तुति हमारे मन को पवित्र भावों से भरकर प्रभु के और समीप ले जाने में मदद करते है । भावपूर्ण भजन केवल सुनने में ही अच्छे नहीं लगते, वे हमें शांति का अनुभव भी कराते हैं । भजनों के द्वारा भक्ति करने की परम्परा बहुत प्राचीन है और आज भी अनवरत चली आ रही है किंतु समय के साथ इनके स्वरुप में काफी बदलाव आया है । आज भजन प्राय: अपनी मौलिकता खोकर फिल्मी गीतों की नकल मात्र होने लगे हैं जिनमें अधिकतर फूहड़, भोंडे एवं अश्लील शब्दों को थोड़ा सा हेरफेर कर भजनों का स्वरुप दे दिया जाता है । क्या ऐसे भजनों को गाते समय और सुनते समय हमारा मन अपेक्षित शांति और पवित्रता का अनुभव कर पाते है कि भजन के मूल फूहड़ गीत का मुखड़ा ही मन मस्तिष्क में घूमता है। इस प्रकार के भजनों में वह सात्विकता नहीं रह पाती न ही ऐसा भजन मन में वीतरागता भर पाता है । अच्छा हो कि भजन रचियता भजन का मूल स्वरुप पुनर्जीवित कर भावपूर्ण और वीतराग छवि से ओतप्रोत भजन रचें । यदि फिल्मी गीतों पर आधारित ही लेना हो तो इतना अवश्य करें कि वे फूहड़ गीतों पर न होकर शालीन गीतों पर आधारित हो, जो भजन के साथ संगत हो सके और भजन के मूल उद्देश्य को कायम रख सकें ।

कई नगरों में बन्द हुए महिला संगीत के नाम पर फूहड़ नाच-गाने

आजकल एक बड़ी बहस चल रही है । मुद्दा है विवाह समारोहों में महिला संगीत के नाम पर परोसी जाने वाली अश्लील और पश्चिमी संस्कृति के प्रदर्शन करती फूहड़ नृत्य प्रस्तुतियां बंद कर उनके स्थान पर हमारे पारम्परिक गीतों और भजनों के कार्यक्रम रखे जाएं । विषय असंगत नहीं है । वास्तव में आजकल विवाह समारोहों से हमारे पारंपरिक रीति रिवाज और देसी संस्कृति की खुशबू गायब होती जा रही है । विवाह के कई दिनों पूर्व से ही शादी वाले घर में ढोलक की थाप के साथ पारंपरिक बन्ना बन्नी गाने की स्वर लहरियां पूरे मोहल्ले में उत्सुकता और उत्साह जगा देती थी । बगैर गीत संगीत के कोई रस्म पूरी नहीं होती थी । विवाह में एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का दर्शन दिखाई देता था, आज सब कुछ बदल गया है । पारंपरिक रीति रिवाजों की खाना पूर्ति करके अधिकांश समय वस्त्राभूषणों की खरीददारी, ब्यूटी पार्लर के चक्कर लगाने और महिला संगीत हेतु पश्चिमी संगीत के नृत्यों की प्रैक्टिस में ही निकल जाता है । संगीत संध्या के नाम पर बच्चों से लेकर बड़ो द्वारा ऐसे गीतों और नृत्यों की प्रस्तुतियां दी जाती है जिनका विवाह की रस्मों से कोई लेना देना नहीं होता । वे किस तरह का मनोरंजन है । क्या हम अपने देसी और पारम्परिक मनोरंजन के स्थान पर कानफोडू डीजे के फूहड़ गीत संगीत को महिला संगीत का नाम देकर अपने आप को आधुनिक कहलाने का ढोंग नहीं कर रहे ? विवाह अपने आप में विशुद्ध पारंपरिक क्रिया है जिसमें हर परिवार और समाज की संस्कृति के दर्शन होते हैं । इसमें पश्चिमी सभ्यता के रीति रिवाजों को अपनाते हुए हम अपने आपको ही भूलते जा रहे हैं । धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से यह हमारे लिए अपनी जड़ों से दूर करने जैसा है । विवाह संपन्न होने वाले घर में आज के युवा वर्ग के साथ उनके माता पिता, रिश्तेदार महिला संगीत के नाम पर एक दो महिने तक नृत्य सिखाने के बहाने डांस ट्रेनर कमर में हाथ डालकर नचाते हैं इससे आपके परिवार को आखिर क्या हासिल होता है ? क्या शादी ब्याह में स्टेज पर कुछ ठुमके लगाने से क्या वे नृत्य की राष्ट्रीय ऊचाइयों के आसपास भी पहुंच पायेंगे ? फिर क्यों परिवार के लोग नृत्य के नाम पर समाज जनों के सामने फूहड़ डांस का प्रदर्शन कर अपने घर की गरिमा दांव पर लगाने में फक्र अनुभव करते है । वैसे शालीनता पूर्ण पारंपरिक नृत्य व लोकनृत्य भी काफी सुन्दर होता है, उसी के आधार पर यदि आप विवाह समारोह में महिला संगीत का आयोजन करते है तो वह काफी सुरुचिपूर्ण व शालीन हो सकता है । समाज के प्रबुद्धजनों से इस विषय पर विचार करने की अपेक्षा है । इस विषय पर आपके विचार व प्रतिक्रिया हमें भेंजे ताकि पत्र में उन्हें उचित स्थान दिया जा सके ।

जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन का 22वां रा. अधिवेशन भोपाल के महावीर मेडिकल कॉलेज (मेम्स) में

राजेश जैन लड्डू, भोपाल । महावीर मेडिकल कॉलेज (मेम्स), भोपाल में दिनांक 13 व 14 जनवरी 2018 को दि. जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन की 22वें राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन हो रहा है, जिसकी तैयारियां अंतिम चरणों में है जहां एक ओर भोपाल के जैन समाज एवं सोशल ग्रुपों में इस गरिमामयी भव्य आयोजन की चर्चाएं हो रही है वही आयोजन समिति के पदाधिकारी भी आयोजन को ऐतिहासिक बनाने के लिए जी तोड़ मेहनत कर रहे हैं । अधिवेशन के प्रमुख संरक्षक श्री सुनील जैन '501' के नेतृत्व एवं श्री सुभाष जैन काला जी के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय अधिवेशन के प्रतिनिधि मंडल ने आज भोपाल के महापौर श्री आलोक शर्मा से मुलाकात कर अधिवेशन के संबंध में अब तक हुई प्रगति की जानकारी देते हुए कहा कि भोपाल में इतना बड़ा आयोजन सम्पन्न होने जा रहा है । महापौर श्री शर्मा ने अधिवेशन में उपस्थिति की सहर्ष सहमति प्रदान की और कहा कि विगत 25 वर्षों से समाजसेवा में जुड़े श्री सुभाष जी काला साहब की मेहनत का ही परिणाम है इस राष्ट्रीय अधिवेशन का आयोजन भोपाल में हो रहा है, उन्होंने भावना प्रकट की कि इस अधिवेशन में माननीय मुख्यमंत्री जी को आमंत्रित करने वे स्वयं जाएंगे । इस अवसर पर महापौर श्री आलोक शर्मा ने इंदौर से प्रकाशित फेडरेशन की मुख्य पत्रिका युग अस्तित्व बोध के अधिवेशन विशेषांक का विमोचन भी किया । इस अवसर पर सोशल ग्रुप फेडरेशन के संस्थापक अध्यक्ष श्री प्रदीपजी कासलीवाल ने दूरभाष पर माननीय महापौर जी को धन्यवाद देते हुए आभार प्रकट किया, साथ ही फेडरेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री हँसमुख जी गांधी ने भी आयोजन समिति को बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की । इसके पूर्व महावीर मेडिकल कॉलेज (मेम्स) के विशाल प्रांगण में जैन समाज की सर्वोच्च समाजसेवी संस्था दि. जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन के 22वें राष्ट्रीय अधिवेशन 2018 को सफल बनाने के लिए आमंत्रित सदस्यों की एक बैठक आयोजित की गयी । आयोजन के प्रमुख संरक्षक श्री सुनील जैन '501' के मार्गदर्शन कार्यक्रम चेयरमेन श्री सुभाष काला जी की अध्यक्षता, महावीर मेडिकल कॉलेज के सचिव डॉ राजेश जैन के मुख्य आतिथ्य एवं आयोजन समिति के समस्त पदाधिकारियों की गरिमामय उपस्थिति में जवाहर चौक जैन मंदिर प्रांगण में मध्य रीजन के सभी ग्रुपों के साथ आवश्यक बैठक का आयोजन कर उन्हें अधिवेशन संबंधित जानकारियां दी । बैठक में सभी सोशल ग्रुपों के सदस्यों ने अपने विचार रखें एवं अधिवेशन को भव्य ओर ऐतिहासिक बनाने हेतु अपनी ओर से पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया । बैठक का संचालन प्रदीप जैन छाबड़ा ने एवं आभार व्यक्त नरेंद्र बड़जात्या ने किया ।

हम बदलें-युग बदले

हम बदलें युग बदलें, युग के हमी प्रणेता है ।
कर्मठता के वीर सिपाही, युग के सही विजेता है ।

युवक शक्ति मत कम आंको, मत कहो युवक में राह नहीं है,
किन्तु तुम्हारे मन में झांकों, तुम्हें युवक की चाह नहीं है,
कर्म भूमि के युवा पुजारी, सारे युग के नेता है,

हम बदलें, युग बदले...

युवकों से युग का जीवन है, युवक युगों का त्राता है,
युवकों की मत करो ठिठोली, युवक युगों का निर्माता है,
संघर्षों के जीवन रण में, उत्कृष्ट प्रेम के प्रेरेता है ।

हम बदलें, युग बदले...

निर्माता है निर्जन में, राहों के, युवकों को ललकार चाहिये,
मत देखो नफरत से भाई, उन्हे आपका प्यार चाहिये,
जहां चाह है, वही राह है, हर राहों के ज्ञेता है ।

हम बदलें, युग बदले...

आशाओं के अंबर से अदभुत, चांत सितारे ला सकते है,
स्वर्णिम सपने पूरे करने, कांटो में भी जा सकते है,
द्रढ़ निश्चय के देव दूत हैं, दृढ़ता दिव्य दिवेता है ।

हम बदलें, युग बदले...

यौवन युग का दर्पण है, सक्रियता है पूर्ण विकास,
युवक तिमिर की रजनी ढाकर, लायेंगे फिर नया प्रकाश,
कर्म योगी निष्काम जगत के, निष्काम कर्म विक्रेता हैं ।

हम बदलें, युग बदले...

सुखनंदनकुमार जैन ''प्रशांत''
अहमदाबाद

गोलालारीय समाज की प्रथम साख संस्था का रजत जयंती स्नेह सम्मेलन

देश की प्रथम गोलालारीय समाज सदस्यों द्वारा संचालित पार्श्वनाथ सहकारी साख संस्था का गठन आज से 25 वर्ष पूर्व 1993 में हुआ था । आज यह संस्था अपना रजत जयंती वर्ष अपने सदस्यों के साथ हर्षोल्लासपूर्वक मना रही है । समाज के वरिष्ठ सदस्य श्री रमेशचंदजी क्लर्क कालोनी के मार्गदर्शन में श्री राजेन्द्रकुमारजी 'सावकलवालों' के संस्थापक अध्यक्ष के सानिध्य में 62 सदस्यों के साथ संस्था प्रारंभ की गयी थी । संस्था द्वारा समय समय पर पुरस्कार व स्नेह सम्मेलन का आयोजन किया जाता रहा है । दिनांक 21 जनवरी को संस्था का रजत जयंती महोत्सव नगर के प्रसिद्ध धर्मस्थल नवग्रह जिनालय पर रखा गया है । यहां सदस्यों को पुरस्कार वितरण, सांस्कृतिक व मनोरंजक गेम्स के साथ स्नेह भोज का आयोजन किया गया है । 25 वर्षों में संस्था ने उत्तरोत्तर प्रगति की है । संस्थापक अध्यक्ष के पश्चात श्री प्रमोद कुमार जैन 'पेठेवाले' व पूर्व अध्यक्ष श्री विजयकुमार जैन 'बियावानीवाले' ने संस्था को नवीन ऊंचाईयां प्रदान की । श्री विजयकुमारजी के कार्यकाल में सर्वाधिक ऋण राशि का वितरण व शत प्रतिशत ऋण भुगतान से संस्था आर्थिक रुप से सुदृढ़ हुई है । वर्तमान में सभी सदस्यों को परिवार कल्याण योजना का लाभ प्रदान किया जा रहा है जिसमें सदस्य की मृत्यु पश्चात् परिजनों को 11000/- की राशि संस्था द्वारा प्रदान की जाती है । वर्तमान अध्यक्ष श्री सुधेशकुमार जैन एवं संचालक मंडल द्वारा सदस्यों को 1 लाख रुपये की ऋण राशि देने का प्रावधान रखा गया है । जिससे सदस्यों को तत्काल आर्थिक संबल उपलब्ध रहेगा। इन्दौर नगर के समाजजनों से निवेदन है कि वे संस्था के सदस्य बनने हेतु संस्था कार्यालय 64 न्यू देवास रोड़ पर प्रति रविवार 11 से 1 बजे के मध्य श्री पवनकुमार जैन संपर्क कर सकते है ।

* विनम्र श्रद्धांजली *

स्व. हरकचंदजी जैन के मंझले **पुत्र अमित जैन** का हृदयघात होने से अल्पायु में 11 दिसम्बर 2017 को इन्दौर में निधन हो गया ।

गोलालारीय दर्शन परिवार की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।

नोट - विधिवत जानकारी प्राप्त होने पर ही शोक संदेश का सचित्र प्रकाशन किया जावेगा।

हार्दिक शुभकामनाएँ

डॉ. अंशकुमार जैन, टीकमगढ़ के सुपुत्र श्री आशीष-राखी जैन को दिनांक 8.08.17 को रक्षाबंधन के दिन 'आर्जव जैन' के जन्म पर हार्दिक शुभकामनाएँ ।

विशेष सहयोगी -

डॉ. अंशकुमार जैन
टीकमगढ

श्री अरविंदकुमार जैन
जामनेर, गुना